Poem -1 by Rati Saxena

## कुछ बचा कर रख लेती थी, माँ

कैसी भी परिस्थिति में
किसी भी दुविधा में खाली नहीं होता था,
माँ का भण्डार, थोड़ा बहुत बचा कर रख लेती थी
तेल, अनाज, दाल या अचार
भड़िया में नमक के दानें, मर्तबान में गुड़
जी लेते थे सदियाँ, उस जादुई कोठरी में
सिम सिम कहे बिना, जिसमें से माँ निकाल ले आती थीं
थोड़ा बहुत जरूरत का सामान, किसी भी समय

माँ बचा कर रखती थीं, थोड़ा बहुत माँस
कमर और कूल्हों पर
एक के बाद एक जनमते सात बच्चों की
भूख  के लिये, जो नही कर सकती थी दुर्दिन का साक्षात्कार
और उन्हीं गुदगदे अहसासों पर
सोई सुख से  उसकी  अगली पीढ़ी

बचा कर रखती थी, वे किस्से कहानियाँ
अनजानी धुने, सपनों की सीढ़ियाँ
बच्चों के उन बच्चों के लिये, जो
बड़े होने तक ठिठके रहे नानी की कहानियों में

माँ ने आखिरी समय बचा कर रखी कुछ साँसें

बेटियों के मैका बनाये रख पाने  के लिये
पानी में पड़ी शक्कर की बोरी सी घुलती रही

## 1. Mother Used to Save

At any moment,

under any conditions, the storehouse

of mother was never empty,

she saved oils, grains, pickles, beans,

salt in clay pots, glass jars of jaggery,

all of it living for centuries

in her magic storeroom, and available

in an instant

without a single “Open, Sesame!”

Mother saved flesh, too:

on her waist and hips, for her

seven hungry children, born

one after another,

and for the next generation:

to love grandma’s soft, sweet feel.

And she saved stories, myths,

unknown rhythms, steps

for the grandchildren’s dreams,

a way of keeping her with them

after she’s long gone.

In her final moments, her last

breaths left her daughters a home,

through which she keeps dissolving

like a sugar packet into water.

(Translated by Seth Michelson)